

Document ID: ARCHIVE-1671-SARAIGHAT-REALHIST

Title / शीर्षक: The Battle of Saraighat (1671): Historical Documentation & Analysis / सरायघाट का युद्ध (1671): प्रामाणिक ऐतिहासिक साक्ष्य एवं विश्लेषण

Author / लेखक: Govind Malviya (REAL HI STORY)

Publication Date / तिथि: August 27, 2026

Subject / विषय: Medieval Indian History, Ahom-Mughal Conflicts, Naval Warfare

**सरायघाट का महायुद्ध (मार्च 1671): ब्रह्मपुत्र का रक्तपात एवं मुगल साम्राज्य का पराभव**

- शिवाजी महाराज का आगरा से निष्क्रमण (1666): छत्रपति शिवाजी महाराज के आगरा से सुरक्षित निकलने के बाद औरंगजेब का संदेह मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र राजा राम सिंह प्रथम (आमेर/जयपुर) पर गहराया।
- असम अभियान का आदेश (1667): राजपूतों के सीधे विद्रोह से बचने के लिए औरंगजेब ने राजा राम सिंह को अहोम साम्राज्य (असम) के कठिन और दुरूह अभियान पर भेज दिया, जिसे मुगल दरबार में अति-जोखिम भरा क्षेत्र माना जाता था।
- अहोम राजवंश का मूल: अहोम ताई-शान (दक्षिण-पूर्व एशियाई) मूल के थे, वे राजपूत नहीं थे। इस युद्ध के समय अहोम साम्राज्य के सम्राट स्वर्गदेव उदायादित्य सिंह थे, जो गढ़गाँव (राजधानी) से सैन्य सहायता एवं रसद की आपूर्ति नियंत्रित कर रहे थे।

**2. सैन्य बल एवं कमान संरचना**

| मापदंड        | मुगल साम्राज्य                             | अहोम साम्राज्य                                    |
|---------------|--------------------------------------------|---------------------------------------------------|
| मुख्य सेनापति | राजा राम सिंह प्रथम (थलमार्ग एवं कुल कमान) | लचित बोरफुकन (निचले असम के गवर्नर एवं मुख्य कमान) |

| मापदंड        | मुगल साम्राज्य                                     | अहोम साम्राज्य                                       |
|---------------|----------------------------------------------------|------------------------------------------------------|
| नौसेनाध्यक्ष  | मुनाव्वर खान (Naval Admiral)                       | लचित बोरफुकन (प्रत्यक्ष कमान)                        |
| सैन्य क्षमता  | 30,000 पैदल, 18,000 तुर्क घुड़सवार, 15,000 तीरंदाज | छापामार दस्तें, नौसैनिक बचारी बेड़ा, मिट्टी के दुर्ग |
| नौसैनिक बेड़ा | 500 से अधिक भारी तोपयुक्त गुराब (Galleys)          | हल्की, तीव्रगामी बचारी (Bachari) नावें               |

### 3. रणनीतिक घेराबंदी और 'मोमाई कटा गढ़'

अहोम सेनापति लचित बोरफुकन जानते थे कि खुले मैदानी क्षेत्रों में मुगल तोपखाने का मुकाबला करना घातक होगा। उन्होंने युद्ध को ब्रह्मपुत्र के संकरे मुहाने **सरायघाट (गुवाहाटी)** पर केंद्रित करने का निर्णय लिया।

- कठोर अनुशासन:** गुवाहाटी की सुरक्षा हेतु रातों-रात मिट्टी का तटबंध (*मोमाई कटा गढ़*) तैयार करना था। काम में शिथिलता देखने पर लचित ने अपने सगे मामा का वध कर दिया और ऐतिहासिक वाक्य कहा:

*"देशैत कोइ मोमाई डांगोर नोहोय" (देश से बड़ा मेरा मामा नहीं हो सकता।)*

### 4. सरायघाट का भयंकर जल-युद्ध (90% विवरण)

मार्च 1671 में ब्रह्मपुत्र नदी के संकरे जल क्षेत्र में निर्णायक लड़ाई छिड़ गई:

- मुगल तोपखाना और प्रारंभिक दबाव:** मुनाव्वर खान के नेतृत्व में मुगल नौसेना ने भयंकर तोपबारी की। भारी तबाही देखकर अहोम सैनिक तट की ओर पीछे हटने लगे।

- **सेनापति का आत्मघाती प्रहार:** लचित बोरफुकन 104°F के तेज ज्वर से पीड़ित थे। अपनी सेना को हतोत्साहित देखकर उन्होंने आदेश दिया कि उन्हें खाट समेत उनकी युद्ध-नाव (बचारी) पर लादकर मुगल बेड़े के बीच उतार दिया जाए।
- **तैरता पुल एवं मुनाव्वर खान का वध:** अपने बीमार सेनापति को अग्रिम पंक्ति में देखकर अहोम सेना का मनोबल लौट आया।
  - सरायघाट का मुहाना संकरा होने के कारण भारी मुगल जहाज़ मुड़ नहीं पाए।
  - अहोमों ने अपनी हल्की नावों को परस्पर जोड़कर नदी में तैरता हुआ पुल (Floating Bridge) निर्मित किया।
  - आमने-सामने के युद्ध में मुगल नौसेनाध्यक्ष मुनाव्वर खान गोली लगने से मारा गया।
- **परिणाम:** सेनापति के हताहत होते ही मुगल बेड़े में भगदड़ मच गई। सैकड़ों मुगल जहाज़ नष्ट कर दिए गए और सेना को मानस नदी (बंगाल सीमा) तक पीछे हटना पड़ा।

## 5. युद्ध के बाद की स्थिति एवं अंत

- **राजा राम सिंह की स्वीकारोक्ति:** राम सिंह ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि उन्होंने पूरे भारत में लचित जैसा चतुर और अजेय सेनापति नहीं देखा।
- **अफगानिस्तान में स्थानांतरण:** युद्ध के पश्चात औरंगजेब ने राम सिंह को सजा के तौर पर उत्तर-पश्चिम सीमांत (कोहाट/जामरूद - वर्तमान अफगानिस्तान सीमा) भेज दिया, जहाँ 1688 ई. में उनकी मृत्यु हुई।

## 6. प्रामाणिक ऐतिहासिक साक्ष्य (Evidence)

- **अहोम बुरंजी (Ahom Buranjis):** कामरुपर बुरंजी और अहोम बुरंजी में दर्ज समकालीन विवरण।
- **फ़तुहिया-ए-इब्रिया (Fathiya-i-Ibriyyah):** मुगल इतिहासकार शिहाबुद्दीन तालिश द्वारा लिखित वृत्तांत।
- **बीकानेर राज्य अभिलेखागार:** जयपुर घराने के समकालीन पत्र एवं दस्तावेज।
- **राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA):** खड़कवासला में प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ कैडेट को दिया जाने वाला 'Lachit Borphukan Gold Medal'।

# The Battle of Saraighat (March 1671): A Tactical Naval Analysis and Primary Record

## 1. Historical Background & Geopolitical Prelude

- The Agra Incident (1666):** Following the escape of Chhatrapati Shivaji Maharaj from Agra, Emperor Aurangzeb held **Raja Ram Singh I of Amber (Jaipur)** responsible due to his oversight duty.
- The Assam Assignment (1667):** To avoid open conflict with Rajput vassals, Aurangzeb dispatched Ram Singh to command the difficult campaign against the Ahom Kingdom in the Northeast.
- Ahom Lineage:** The Ahoms were of Tai-Shan (Southeast Asian) lineage, distinct from Rajputs. During the battle, **Swargadeo Udayaditya Singha** ruled from Garhgaon (capital), overseeing logistics and reinforcements.

## 2. Force Structure & Command Hierarchy

| Parameter         | Mughal Empire                                   | Ahom Kingdom                                                 |
|-------------------|-------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------|
| Supreme Commander | Raja Ram Singh I (Land & Overall Command)       | Lachit Borphukan (Lower Assam Governor & Military Commander) |
| Naval Admiral     | Munnawar Khan                                   | Lachit Borphukan (Direct Command)                            |
| Total Strength    | 30,000 Infantry, 18,000 Cavalry, 15,000 Archers | Guerrilla units, Naval fleet, Mud fortifications             |
| Naval Fleet       | 500+ Heavy Cannon Galleys ( <i>Gurabs</i> )     | Light, agile maneuver vessels ( <i>Bachari</i> )             |

## 3. Strategic Bottleneck & The Rampart Execution

Lachit Borphukan avoided open-field engagements where Mughal artillery held superiority, forcing a naval confrontation at **Saraighat (Guwahati)**, the narrowest passage of the Brahmaputra River.

- **Command Discipline:** To secure Guwahati, an embankment (*Momai Kota Garh*) was constructed overnight. When work lagged under his maternal uncle's oversight, Lachit executed him on the field, stating:

*"My uncle is not greater than my nation."*

#### 4. The Naval Engagement at Saraighat

In March 1671, the decisive naval confrontation occurred on the Brahmaputra:

- **Initial Cannonade:** Mughal Admiral Munnawar Khan launched a heavy artillery bombardment, causing initial retreat among Ahom vanguards.
- **Counter-Assault by Lachit:** Despite suffering from severe fever (104°F), Lachit ordered his bed moved onto his warboat (*Bachari*) to lead the counter-charge directly into the line of fire.
- **Tactical Execution & Admiral's Demise:**
  - Heavy Mughal vessels (*Gurabs*) were unable to maneuver in the narrow waters.
  - Ahoms connected their light vessels to construct a **floating bridge** across the river channel.
  - Close-quarters combat resulted in the **death of Mughal Admiral Munnawar Khan by gunfire.**
- **Outcome:** The death of Admiral Munnawar Khan broke Mughal cohesion. The remaining fleet was destroyed or captured, pushing Mughal forces back to the Manas River.

#### 5. Post-Battle Operations & Aftermath

- **Assessment by Ram Singh:** Ram Singh's dispatches acknowledged the tactical superiority of the Ahom defensive network and leadership.
- **Deployment to the Frontier:** Following the failure of the campaign, Aurangzeb posted Ram Singh to the Northwestern Frontier (**Kohat/Jamrud**), where he died in **1688**.

#### 6. Primary Sources and Historical Evidence

- **Ahom Buranjis:** Contemporary state registers (*Kamrupar Buranji*) documenting daily logs and military maneuvers.
- **Fathiya-i-Ibriyyah:** Mughal historical account authored by Shihabuddin Talish detailing Northeastern expeditions.
- **Bikaner State Archives:** Contemporary dispatches preserved at the Rajasthan State Archives.
- **National Defence Academy (NDA):** Annual presentation of the '**Lachit Borphukan Gold Medal**' to the top passing-out cadet at Khadakwasla.

